

लोक सभा  
अतारांकित प्रश्न संख्या 2030  
दिनांक 11.03.2025 को उत्तर दिए जाने के लिए

**“पारंपरिक कालीन शिल्प”**

**2030. श्री अभय कुमार सिन्हा:**

**क्या वस्त्र मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:**

- (क) क्या सरकार को जानकारी है कि औरंगाबाद पारंपरिक कालीन शिल्प के लिए प्रसिद्ध है तथा बिहार में इसका अत्यधिक महत्व है;
- (ख) यदि हां, तो राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत की समृद्ध विरासत एवं शिल्पकला के प्रतीक के रूप में औरंगाबाद कालीन को बढ़ावा देने के लिए क्या कदम उठाए जा रहे हैं;
- (ग) क्या सरकार की औरंगाबाद कालीन की प्रामाणिकता को बनाए रखने तथा इसकी बाजार क्षमता को बढ़ाने के लिए इसे भौगोलिक संकेतक (जीआई) टैग देने की योजना है;
- (घ) कालीन उत्पादन एवं निर्यात को बढ़ावा देने के लिए औरंगाबाद के कारीगरों एवं बुनकरों को उपलब्ध कराई जा रही योजनाएं या प्रोत्साहन क्या है; और
- (ङ) क्या सरकार के पास औरंगाबाद कालीन के वैश्विक विस्तार को बढ़ावा देने के लिए समर्पित निर्यात क्षेत्र स्थापित करने अथवा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेलों के साथ सहयोग करने का कोई प्रस्ताव है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

**उत्तर  
वस्त्र मंत्री  
(श्री गिरिराज सिंह)**

(क) से (घ): वस्त्र मंत्रालय के अधीन विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) कार्यालय औरंगाबाद, बिहार सहित देश भर के हस्तशिल्प क्षेत्र के समग्र विकास और संवर्धन के लिए दो योजनाएं नामशः राष्ट्रीय हस्तशिल्प विकास कार्यक्रम (एनएचडीपी) और व्यापक हस्तशिल्प क्लस्टर विकास योजना (सीएचसीडीएस) कार्यान्वित करता है। इसके अतिरिक्त, इस कार्यालय ने औरंगाबाद जिले में कालीन एवं अन्य फर्श बिछावन शिल्प में पहचान पहल के तहत 600 पहचान कार्ड पहले ही जारी किए हैं। साथ ही, यह कार्यालय हमारी समृद्ध विरासत, शिल्पकारिता को बढ़ावा देने और हस्तशिल्प कारीगरों के बीच उद्यमिता की भावना लाने के लिए उत्पादक कंपनियों के गठन के लिए सहायता प्रदान करता है। इसके अलावा, मैसर्स ओबरा कार्पेट हेंडीक्राफ्ट प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड नामक एक उत्पादन कंपनी का गठन किया गया जो 520 कारीगरों के साथ कालीन शिल्प के क्षेत्र में कार्य कर रही है। इसके अतिरिक्त, औरंगाबाद कालीन को भौगोलिक संकेतक (जीआई) टैग प्रदान करने का कोई प्रस्ताव इस कार्यालय में प्राप्त नहीं हुआ है।

(ङ): विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) कार्यालय के पास बिहार के औरंगाबाद कालीनों के संवर्धन एवं निर्यात के लिए समर्पित निर्यात क्षेत्र स्थापित करने का कोई प्रस्ताव नहीं है। तथापि, एनएचडीपी योजना के तहत, निर्यातकों और कारीगरों को अंतर्राष्ट्रीय एवं घरेलू कार्यक्रमों में अपने शिल्पों के प्रदर्शन के लिए विपणन अवसर प्रदान किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त, बिहार राज्य के औरंगाबाद जिले में ओबरा क्लस्टर के तीन कालीन कारीगरों ने अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम में एक्सपोजर के लिए प्रतिष्ठित भारत टेक्स 2024 में भाग लिया।